13 कबीर के दोहे (Couplets of Kabir)

कविता का मर्म (Theme of the Poem)

महापुरुषों की वाणी हमारा मार्गदर्शन करती है और हमें नीति के पथ पर चलना सिखाती है। कबीर के दोहे भी नीति से भरे हैं। आइए पढ़ें और इनके अर्थ समझें।

Do it in your literature copy.

साँच बराबर तप नहीं, झूठ बराबर पाप।
जाकै हिरदै साँच है, ताके हिरदै आप।।

गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूँ पाँय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय।।

निंदक नियरे राखिए, आँगन कुटी छवाय।
बिनु पानी साबुन बिना, निर्मल करे सुभाय।।